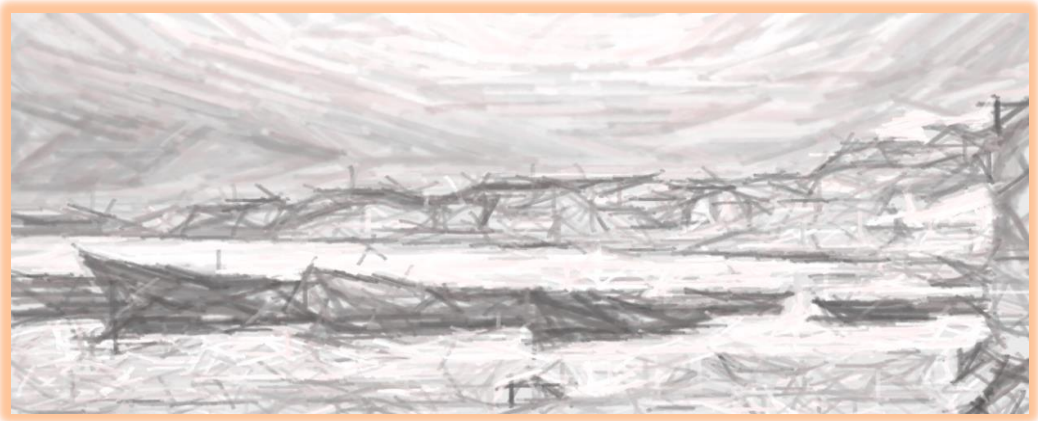

चित्रःगूगल से साभार

पुण्य

गंगा की सीढ़िया उतरते समय मनोहर शास्त्री के मन में हजारों सवाल उछाले मार रहे थे। परसों बेटी की शादी है और लड़के वालों की इक नई फरमाइश, दो तोले की सोने की चेन। वो भी दूल्हे को नहीं उसके बहनोई को। कहाँ से लाऊँ इतना पैसा, पंडिताई करके इतना पैसा कहाँ जुटता है। इसी उधेड़बुन में शास्त्री जी ने गंगाजल का आचमन करके डुबकी लगाई।

लेकिन डुबकी लगाते ही उनका सिर किसी दूसरे के सिर से टकराया, शास्त्री जी क्रोधित होकर बोले-'दिखता नहीं है क्या? गंगाजी केवल तुम्हारी बपौती नहीं है।' शास्त्री जी प्रतिउत्तर की तलाश में थे, लेकिन कोई होता तो ना जवाब देता। वो तो एक सुहागन स्त्री की लाश थी। सुहागन थी, सो सोलह शृंगार भी था। उनमें से कुछ गहने सोने के भी थे। शास्त्री जी की आँखों में चमक आ गई।

अगली डुबकी में उनके हाथों में सोने के गहने थे। अब शास्त्री जी का हृदय गंगा स्नान के पुण्य और कन्यादान के पुण्य के बराबर हो गया था।

-रवि प्रकाश केशरी

वाराणसी